ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 326-328

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

# महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा : सामाजिक एवं आर्थिक सन्दर्भ

**डॉ0 ऋतु दीक्षित** Email : rdritudixit@gmail.com

**Received- 28.06.2020, Revised- 01.07.2020, Accepted - 04.07.2020**

***सारांश–*** ***शिक्षा को विकास का एक महत्वपूर्ण तथ्य मानते हुए स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान ही महात्मा गांधी ने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। बुनियादी शिक्षा के माध्यम से उन्होने देश की दलित, शोषित, पिछड़ी और शिक्षा की पहुंच से दूर आम जनता कोशिक्षा में समान रूप से व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की जो सामाजिक समानता का बोध कराती हो। सामाजिक चेतना, सामाजिक शिष्टाचार, और सहकारिता की भावना विकसित करती हो। स्वावलम्बी, रोजगारपरक एवं राष्ट्र के आर्थिक विकास से जुड़ी हो, बुनियादी शिक्षा गांधीजी के इन्ही सपनों को साकार करने का दर्शन है।***

**कुंजीभूत शब्द–** बुनियादी शिक्षा, सामाजिक समानता, दलित, शोषित।

*एसो0 प्रो0 समाजशास्त्र दयानन्द आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0), भारत*

**अनुरूपी लेखक**

गांधीजी शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मानव जीवन का सर्वतोन्मुखी विकास मानते थे। उनका कहना था कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य शिशु एवं मानव के शरीर, मन एवं आत्मा में निहित सर्वोतम गुणों का चतुर्मुखी विकास है। इसीलिए सच्ची शिक्षा समग्र या सम्पूर्ण शिक्षण को ही कहना चाहिए, जिससे मानव व्यक्तित्व के अन्तर्निहित आध्यात्मिक, बौद्धिक और भौतिक सभी गुणों का विकास हो सके।

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा से सम्बन्धित विचारों के प्रथम दर्शन "हरिजन" 1937 के अंकों में मिलते हैं। 22–23 अक्टूबर, 1937 को वर्धा के प्रान्तों के कांग्रेसी शिक्षा मंत्रियों और देश के प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों के सम्मेलन में अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को रखते हुए गांधीजी ने कहा कि शिक्षा की वर्तमान अंग्रेजी पद्धती न तो भारतीयों के लिए लाभदायक है और न ही वैज्ञानिक। भारतीय जनमानस का नैतिक उत्थान इससे सम्भव नहीं है। आधुनिक शिक्षा पद्धति को उन्होने ज्ञान प्राप्ति की बनावटी विधि एवं व्यावहारिक कुशलता से दूर तथा देश की आवश्यकताओं की पूर्ति में अक्षम बताया। उनका कहना था कि शिक्षा में उत्पादन शील कार्य की क्षमता हो, जिससे बेकारी की समस्या न बढ़े।

गांधीजी की दृष्टि में प्राथमिक शिक्षा की अवधि 7 वर्ष या इससे कुछ अधिक हो। इसमें अंग्रेजी को छोड़ कर मैट्रिक तक के सभी विषय मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाये जायें। इसके अतिरिक्त किसी एक उद्योग की पूरी शिक्षा विद्यार्थी को दी जाय। ज्ञान के जितने भी आवश्यक अंग हैं, उन सबकी जानकारी इस उद्योग के आधार पर विद्यार्थी को दी जाय जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो। कुल मिलाकर इसमें उच्चतर माध्यमिक शाला तक का शिक्षण विद्यार्थी को मिल जाय।

**बुनियादी शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन–** शिक्षा सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक बदलाव का मुख्य निर्धारक तत्व है। भारत जैसे देश में जहां अत्यधिक सामाजिक विशमताएं हैं, अमीरी–गरीबी के बीच बड़ी खाई है, समाज विभिन्न वर्गों एवं समुदायों में बंटा है, वहां बुनियादी शिक्षा इसे मनोवैज्ञानिक ढंग से पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। अंग्रेजों के उपनिवेशवादी शोषण ने भारतीय समाज को पिछड़ेपन की ओर ढकेल दिया था। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान ही गांधीजी की दृष्टि इन सामाजिक समस्याओं की ओर गयी। इसी दुष्टिकोण को ध्यान में रखकर उन्होने बुनियादी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक उन्नयन के औजार के रूप में इस्तेमाल किया।

गांधीजी समाज और शिक्षा व्यवस्था को एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित मानते थे, इसीलिए बुनियादी शिक्षा के द्वारा वे समाज के हर वर्ग को साथ जोड़ना चाहते थे। उनका सोचना था कि इससे भारतीय समाज के दलित और उपेक्षित वर्गों को बहुत फायदा होगा और उन्हें समाज में ऊँचा स्थान और प्रतिष्ठा दिलाने में मदद मिलेगी। सामाजिक गतिशीलता के मार्ग में जाति प्रथा आज सबसे बड़ी बाधा है, तथा कई तरह के शोषण का आधार बनी है। बुनियादी शिक्षा जातियों को व्यवसाय से अलग करने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

गांधीजी ने शिक्षा में शरीर श्रम को विशेष महत्व दिया, उनका मानना था कि शिक्षा से शारीरिक प्रशिक्षण का सम्बन्धा विच्छिन्न हो जाने के परिणामस्वरूप शारीरिक श्रम को निचले दर्जे का काम समझा जाने लगा था। अगर पेशे या हुनर को स्वतंत्र रूप से वैसा ही दर्जा मिला होता तो हमारे कारीगरों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

में भी क्राम्प्टन और हरग्रीब्ज जैसे आविष्कारक पैदा होते। बुनियादी शिक्षा में शरीर श्रम को विशेष महत्व देने और श्रम की प्रतिष्ठा कायम करने के पीछे गांधीजी का यह भी दृष्टिकोण था कि मेहनतकश और बुद्धिजीवी के बीच के अन्तर को समाप्त किया जाय।

बुनियादी शिक्षा में गांधीजी के स्वदेशी का विचार भी समाहित है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका अर्थ है–अपने देश के वातावरण, संस्कृति, सभ्यता और आबो–हवा के अनुकूल शिक्षा। बुनियादी शिक्षा बालक को अपने आस–पास के वातावरण से जोड़ती है जिससे वह अपने समाज के प्रति जवाबदेह बनता है। शिक्षा को शरीर श्रम से जोड़ने और उद्योगों के माध्यम से शिक्षा देने से गरीबी और असमानता को दूर करने में मदद मिलेगी। साथ ही इसके द्वारा एक अन्य घृणित सामाजिक बुराई, बाल श्रमिकों की समस्या का भी समाधान किया जा सकेगा।

**बुनियादी शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन–** ब्रिटिश शासन की विनाशकारी आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरू प्रदेश की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी जिससे गांवों के पुराने आर्थिक ढांचें तथा कृषि एवं घरेलू उद्योग–धन्धों पर घातक प्रहार हुआ। इनके पतन और शोषण से व्यापक आर्थिक क्षति हुई। जिससे देश के निर्यात का बड़ा धक्का लगा और हिन्दुस्तान जो कृषि और उद्योग की मिली–जुली संस्कृति वाला देश था, अब मुख्य रूप से एक खेतिहर देश बन गया। जिससे गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन के साथ बेरोजगारी और भुखमरी भी बढ़ी।

गांधीजी औपनिवेशक शासन की आर्थिक नीतियों के दुष्प्रभाव से चिन्तित थे। वे शिक्षा में व्यापक परिवर्तन के जरिये इसे दूर करना चाहते थे। इसीलिए उन्होने बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की। साथ ही गांधीजी की सूक्ष्म दृष्टि ने यह देख लिया था कि हिन्दुस्तान की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और देश के संसाधन सीमित हैं, ऐसी स्थिति में शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ने पर ही विशाल जनसंख्या का समाधान हो सकता है और देश का आर्थिक विकास हो सकता है। गांधीजी का कहना था कि यहां के जनसाधारण के लिए सबसे बड़ा महत्व काम का है, और शिक्षा शास्त्रियों का कर्तव्य उस काम को ऐसा रूप देना है, जिससे लोगों को काम के जरिये शिक्षा भी प्राप्त हो। पिछले 50 वर्षों में लगातार आर्थिक विकास के बावजूद देश से गरीबी समाप्त करने में सफलता नहीं मिली। देश की जनता 21वीं सदी में ऐसे समय में प्रवेश कर रही है जब प्रति व्यक्ति आय निम्न है और मानव संसाधन विश्व मापदण्ड में देश का स्थान नीचे है। वर्तमान शिक्षा के लिए अपनायी गयी प्रणाली से करोड़ों लोग तो मैट्रिक और उसके बाद इण्टरमीडिएट तक जाते–जाते पढ़ाई छोड़ देते हैं, और बेरोजगार हो जाते हैं। बुनियादी शिक्षा के पीछे गांधीजी की यही धारणा थी कि यह शिक्षा बालकों को श्रम की मर्यादा समझा कर किसी एक दस्तकारी में प्रवीण करती है। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और गरीबी दूर करने में मदद मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से बुनियादी शिक्षा गांधीजी के स्वदेशी के विचारों पर आधारित है। वे देश में बनी वस्तुओं के इस्तेमाल पर जोर देते थे। जिससे देशी उद्योग–धन्धों की रक्षा हो सके। उनके स्वदेशी का उद्देश्य था, समाज को आत्मनिर्भर बनाना तथा देश की पूंजी का देश में रहने देना। देश के आर्थिक विकास में लधु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण है। गांधीजी का इस शिक्षा योजना में बालक महत्वपूर्ण है। सात वर्ष की उम्र के बच्चों को शिक्षा देने के लिए एक पूर्व बुनियादी शिक्षा क्रम बना और बुनियादी के बाद उन्ही सिद्धान्तों पर आधारित उत्तर बुनियादी शिक्षा चौदह से उन्नीस वर्ष के किशोरों के लिए बनी। बुनियादी शिक्षा से सम्बन्धित बहुत सी आलोचनाएं और आशंकाएं भी व्यक्त की गयीं और कहा गया कि शिक्षा में शारीरिक श्रम और हस्त कौशल को अधिक महत्व देने से पढ़ाई–लिखाई की हानि होगी। परन्तु गांधीजी ने इस आशंका को दूर करते हुए कहा कि बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को कारीगर बनाना नहीं वरन् हस्त कौशल और उसके उपकरणों द्वारा शिक्षा देना है। यह पुस्तकीय शिक्षा से सर्वथा भिन्न श्रम मूलक शिक्षा है। गांधीजी यह नहीं मानते थे कि दस्तकारी की शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों का विकास किसी तरह बाधित होगा। बल्कि इसके द्वारा उनका सम्पूर्ण विकास होगा। उनका कहना था कि यह पढ़ाई यंत्रवत नहीं होगी, ताकि विद्यार्थी की प्रतिभा किसी स्तर पर जाकर बाधित न हो। बल्कि उसकी शिक्षा वैज्ञानिक ढंग से दी जायेगी। वे दस्तकारी द्वारा भी शोध ा की पूर्ण गुंजाइश मानते थे। उनका मानना था कि हर उद्योग में सूक्ष्म चिन्तन, शोध और निपुणता की गुंजाइश होती है।

समय–समय पर भारत सरकार ने शिक्षा से सम्बन्धित जो आयोग बैठाये, सबका निष्कर्ष यही था कि शिक्षा ऐसी हो जो मानव को जीवन में उपयोगी और उत्पादक बनाये। कोठारी कमीशन की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का उपकरण बनकर राष्ट्रीय आकांक्षाओं और राष्ट्रीय विकास से आबद्ध होना चाहिए। शिक्षा का जीवन से और जीवन की आवश्यकताओं से सम्बन्ध होना चाहिए। नयी शिक्षा नीति 1986 में भी व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया। बंनियादी शिक्षा की योजना को व्यवस्थित रूप देने तथा उसे आगे बढ़ाने के लिए गठित समिति के अध्यक्ष डॉ0 जाकिर हुसैन ने भी बुनियादी शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त को मौलिक बताते हुए इसे भारतीय परिस्थितियों के सर्वथा उचित और उपयुक्त बताया और कहा कि यदि इसमें कोई कमी रह गयी है तो उसका निराकरण किया जाना चाहिए न कि पूरी पद्धति को ही छोड़ दें।

**निष्कर्ष–** बुनियादी शिक्षा


PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

सम्बन्धी गांधीजी के विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाय तो उनके विचार आज भी देश की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की दृष्टि से उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि उस समय थे यह सही है कि आज परिस्थितियां बदल गयी हैं, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में काफी प्रगति हो चुकी है इसके बावजूद गांधीजी के बुनियादी तालीम का महत्व आज भी पूर्ण रूपेण बरकरार है। वर्तमान में देश की ज्वलंत समस्याएं जैसे–बेरोजगारी, गरीबी, सामाजिक–आर्थिक विषमताओं आदि से निपटने के लिए बुनियादी शिक्षा के आधार को और अधिक व्यापक बनाया जाना चाहिए, और इसमें विविध कौशल और जानकारी को शामिल कर, शिक्षाविदों की राय से इसे अधिक यथार्थ और व्यावहारिक स्वरूप प्रदान कर लागू किया जाना चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नन्दा, बी.आर. (1995) : महात्मा गांधीः एक जीवनी, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।
2. मशरूवाला, किशोरवाला (1995) : गांधी विचारदोहन, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।
3. यंग इण्डिया : 1.9.1929
4. सिंह, रामजी (1986) : गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
5. हरिजन सेवक : 15.3.1935

*****